Dainik Bhaskar (Indore), 28th December 2016, Page - 08

पुराने आईआईटी संस्थानों की अपेक्षा नए में बेहतर है स्टूडेंट-टीचर रेशो

दो साल में आईआईटी संस्थानों के स्टूडेंट-टीचर रेशो में कोई खास बदलाव नहीं आया। वहीं 2008 के बाद शुरू किए गए आईआईटी संस्थानों में पुराने आईआईटी संस्थानों के मुकाबले बेहतर स्टूडेंट-टीचर रेशो है। इस समस्या को जल्द से जल्द हल करने के लिए कोई ठोस योजना भी नहीं है।

आईआईटी, मंडी में सबसे बेहतर है स्टूडेंट-टीचर रेशो, प्रत्येक आठ छात्र पर एक शिक्षक

देश के अधिकतर शिक्षण संस्थानों में स्टूडेंट-टीचर रेशो बड़ी समस्या है। इसमें आईआईटी संस्थान भी शामिल हैं। हाल ही में सामने आए आंकड़ों के मुताबिक नए आईआईटी संस्थानों में स्टूडेंट-टीचर रेशो पुराने संस्थानों की अपेक्षा बेहतर है। आईआईटी संस्थानों में 10:1 स्टूडेंट-टीचर रेशो को बेहतर माना जाता है। नए इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी संस्थानों में आईआईटी, मंडी में स्टूडेंट-टीचर रेशो सबसे बेहतर है, जहां प्रत्येक आठ छात्रों पर एक शिक्षक है। इसी प्रकार आईआईटी रोपड़ में 800 छात्रों के लिए 90 शिक्षक हैं। आईआईटी, गांधीनगर में प्रत्येक 10 छात्रों पर एक शिक्षक, आईआईटी, इंदौर और आईआईटी, हैदराबाद में प्रत्येक 12 छात्रों पर एक शिक्षक हैं। इन संस्थानों में स्टूडेंट-टीचर रेशो बेहतर होने की बड़ी वजह यह है कि ये विश्वभर से फैकल्टी मेंबर रिक्रूट कर रहे हैं और साथ ही रिसर्च के लिए शॉर्ट टर्म फैकल्टी विजिट की सुविधा भी उपलब्ध करा रहे हैं।

वाराणसी में ज्यादा खराब हालत

पुराने आईआईटी में आईआईटी, बीएचयू का स्टूडेंट टीचर रेशो सबसे खराब 22:1 है। इसके बाद आईआईटी खड़गपुर में प्रत्येक 19 छात्रों पर एक शिक्षक, आईआईटी दिल्ली में प्रत्येक 16 छात्रों पर एक शिक्षक और आईआईटी बॉम्बे में प्रत्येक 14 छात्रों पर एक शिक्षक है। हाल ही में एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई थी कि आईआईटी संस्थानों में आधे से ज्यादा शिक्षकों के पद खाली हैं। इन संस्थानों में कुल 5073 स्वीकृत पदों में 2671 पद खाली हैं। पुराने आईआईटी संस्थानों में स्टूडेंट-टीचर रेशो नई समस्या नहीं है। जब भी संस्थानों की ग्लोबल रैंकिंग की बात आती है, तो स्टूडेंट-टीचर रेशो को बेहतर रैंकिंग न होने की बड़ी वजहों में संस्थानों में शिक्षकों की कमी को बड़ी वजह बताया जाता है।

दो साल पहले भी थी ऐसी ही स्थिति

गंभीर बात यह है कि दो साल पहले के आंकड़ों पर नजर डालें तो आज के आंकड़ों से ज्यादा फर्क नहीं देखने को मिलता है। इस दौरान आईआईटी संस्थानों में शिक्षकों के खाली पदों की संख्या 9 फीसदी तक बढ़ गई है। 2014 में आईआईटी, बॉम्बे में प्रत्येक 14 छात्रों पर एक शिक्षक, आईआईटी, दिल्ली में 18 पर एक और आईआईटी रुड़की में प्रत्येक 21 छात्र पर एक ही शिक्षक थे। आईआईटी, खड़गपुर में प्रत्येक 18 छात्र के लिए एक शिक्षक था। इससे स्पष्ट है कि पिछले दो सालों के दौरान स्टूडेंट-टीचर रेशो में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है।